SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

'केशव' के काव्य में नारी चेतना का वैशिष्ट्य

श्याम पाल मौर्य, (Ph.D.), हिन्दी विभाग,
बरेली कॉलेज, बरेली, उत्तरप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
श्याम पाल मौर्य, (Ph.D.), हिन्दी विभाग,
बरेली कॉलेज, बरेली, उत्तरप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 03/01/2022
Revised on : -----
Accepted on : 10/01/2022
Plagiarism : 00% on 03/01/2022

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 0%

Date: Monday, January 03, 2022
Statistics: 4 words Plagiarized / 1619 Total words
Remarks: No Plagiarism Detected - Your Document is Healthy.

ds'ko ds dkO; esa ukjh psruk dk oSf'k"Vî M.k ';ke iky ekS;Z çHkkjh fganh foHkkx] cjsyh d.yst]cjsyhA eksâ 8630325298 egkdfo ds'konkl dk O;fäRo cgqeq[kh FkkA mudk dkO; jhfrdky dk çorZu djrk gSA Hkfädkyhu jkeHkfä ds lkFk ,d ujs'k ds xq# gksus dk xkSjo] dkO;kaxksa ds eeZK gksus dk vkpk;ZRo] /kqja/kj nk'kZfudRo vkSj lkSUn;Z ikj[kh gksus dh nqyZHk çfr"Bk mUgsa çkîr gSA fdlh us mUgsa ân;ghu dgk rks fdlh us dfBu dkO; dk çsr fdUrq ;s lHkh ekU;rk,a vfroknh jgha gSaA mudh vn~Hkqr dkO;&çk;u [kerk] uo;qx dh nwjnf'kZrk] vius ;qx dh lgt laosnu'khyrk mUgsa vçfre cukrs gSaA vusd –f"V;ksa ls os vkSj

शोध सार

महाकवि केशवदास मूलतः रामभक्त थे इसलिए उनकी विचारधारा मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की मर्यादा से प्रेरित है। 'कविप्रिया' और 'रसिकप्रिया' के प्रणेता होने के कारण उनकी काव्य सर्जना नायक–नायिका भेद निरूपणकारी कला व सौन्दर्य चेतना के कारण लौकिकता से परिपुष्ट रही है। 'विज्ञानगीता' के रचनाकार होने से उनकी काव्य चेतना आध्यात्मिकता और दार्शनिकता से संवलित हो गयी है।

वे नारी को मनुष्य के पतन का कारण नहीं मानकर मानव मन की सबसे बड़ी दुर्बलता 'काम' को मानते हैं। परस्त्री प्रेम को वे सर्वथा गर्हित घोषित करते हैं किन्तु पत्नी के बिना पुरुष को जीवन जीने की अनुमति नहीं देते। पत्नी को भी वे पति को देव स्वरूप मानने के लिए कहते हैं।

इस प्रकार कविवर केशव के काव्य में नारी चेतना का उदात्त भारतीय स्वरूप दृष्टिगोचर होता है। पवित्र और सनातन भारतीय परम्परापोषित उनके विचार विखण्डित जीवन मूल्यों को नवीन जीवनी शक्ति प्रदान कर सकते हैं।

मुख्य शब्द

केशवदास, नारी–चेतना, नारी–पुरुष सम्बन्ध, काम, नर–नारी मर्यादा.

महाकवि केशवदास का व्यक्तित्व बहुमुखी था। उनका काव्य रीतिकाल का प्रवर्तन करता है। भक्तिकालीन रामभक्ति के साथ एक नरेश के गुरु होने का गौरव, काव्यांगों के मर्मज्ञ होने का आचार्यत्व, धुरंधर दार्शनिकत्व और सौन्दर्य पारखी होने की दुर्लभ प्रतिष्ठा उन्हें प्राप्त है। किसी ने उन्हें हृदयहीन कहा तो, किसी ने कठिन काव्य का प्रेत, किन्तु ये सभी मान्यताएं अतिवादी रहीं हैं।

उनकी अद्भुत काव्य–प्रणयन क्षमता, नवयुग की दूरदर्शिता, अपने युग की सहज संवेदनशीलता उन्हें अप्रतिम बनाते हैं। अनेक दृष्टियों से वे और उनका काव्य अद्वितीय है। साहित्य के इतिहास में उनके अमर और अभूतपूर्व काव्य मूल्य का विशिष्ट स्थान है। परंपरागत मूल्यों का पोषण करते हुए भी नवीनता का स्वागत करने वाले इस कवि का सौन्दर्यबोध हिंदी काव्य जगत में अभी भी अपार शोध सम्भावनाओं का केन्द्र है। सच्चे अर्थों में वे एक नूतन युग के प्रतिष्ठापक कवि और आचार्य हैं। डॉ० दीन दयालु गुप्त के विचार द्रष्टव्य हैः

''हिंदी साहित्य के भक्तिकाल के अंतिम चरण में देश की राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों के परिवर्तन के साथ हिंदी के कवियों और काव्य प्रेमियों की अभिरूचि और विचारों में परिवर्तन आया। मुगल शासन की उदार नीति ने प्रजा में सांसारिक वैभव सम्पादन की रुचि पैदा की। राजाओं के दरवारों में वीरता और नीति की मंत्रणा के स्थान पर विलासिता के रंग जमने लगे। जन साधारण में हरिचर्चा के स्थान पर नायक–नायिकाओं के अंग–प्रत्यंगों की चर्चा होने लगी। प्रेमभक्ति की शुद्धता ने लौकिक ऐन्द्रियता का रूप धारण कर लिया। स्वाभाविक सौन्दर्य में ऊपरी चमक–दमक विशेष आकर्षक बनी। फलस्वरूप भावाभिव्यंजना में कला को अधिक महत्त्व दिया गया। कवियों का ध्यान आत्मा भाव की प्रबलता से मुड़कर काव्य की सजावट जैसे अलंकार, उक्ति–वैचित्र्य, वाक्पटुता और कल्पना की ओर अधिक जाने लगा। कलात्मक काव्यगुण इतने प्रिय हुए कि कवि, काव्य–विवेकी और काव्य प्रेमियों को काव्यशास्त्र की जानकारी आवश्यक प्रतीत होने लगी। यद्यपि 'हित तरंगिणी' के रचयिता कृपाराम हिंदी अलंकार शास्त्र के आचार्य कहे जाते हैं किन्तु महाकवि केशवदास की अपनी प्रचुर रचनाओं के कारण इस प्रणाली के मुख्य प्रवर्तक और प्रसारक कवि थे।''– **डॉ. दीनदयाल गुप्त,** आचार्य केशवदास, उपोद्धात– पृष्ठ –०१

यद्यपि केशवदास की विद्यमानता भक्तिकाल में थी परंतु उनकी कृतियों ने हिंदी में काव्यांगों की शास्त्रीय प्रणाली को प्रसार दिया इसीलिए उनके काव्य में एक ओर हिंदी साहित्य के भक्तिकालीन कवियों की भक्ति भावना भी विद्यमान थी साथ ही काव्यांगों के विवेचन को जन्म देने वाली लौकिक सौन्दर्भ चेतना भी थी। महाकवि केशवदास ने चार प्रकार की रचनाएं की है– वीरसिंह देव चरित, जहांगीर–जसन्–चन्द्रिका, रतन बनी जैसी लौकिकी वीर गाथाएँ, तुलसी के रामचरितमानस की भाँति प्रबन्धात्मक भक्ति काव्य –रामचन्द्रिका, लक्षण ग्रंथ कवि प्रिया, रसिक प्रिया, रामालंकृत– मंजरी जैसे पिंगल ग्रंथ और विज्ञान गीता जैसे दार्शनिक ग्रन्थों का उन्होंने प्रणयन किया।

कविवर केशवदास मूलतः रामभक्त थे। इसलिये मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम की मर्यादा प्रियता तो उनकी विचारधारा की प्रेरणास्रोत बनी ही, नायक–नायिका भेद निरूपणकारी कला और सौन्दर्य चेतना ने उनकी काव्य सर्जना को लौकिक पुट दिया। विज्ञानगीता के प्रणेता की आध्यात्मिकता और दार्शनिकता ने उनकी काव्य चेतना को तदनुरूप स्वरूप प्रदान किया।

महाकवि केशवदास की नारी चेतना के स्वरूप को हम इन्ही प्रेरणासूत्रों के आधार पर विवेचित कर सकते हैं। वे नारी शक्ति के दिव्य रूपों और गुणों की मुक्त कंठ से स्तुति करते हैंः

बानी जगरानी की उदारता बखानी जाय,
ऐसी मति कहौ धौं उदार कौन की भई।
देवता प्रसिद्ध सिद्ध ऋषिराज तपवृद्ध,
कहि कहि हारे सब कहि न केहूँ लई।
भावी भूत वर्तमान जगत बखानत है,
केशौदास केहू ना बखानी काहू पै गई।
पति वर्णे चार मुख पूत वर्णे पाँच मुख,
नाती वर्णे षटमुख तदपि नई नई।।[1]

यद्यपि महाकवि केशव भक्तिकालीन कवियों की भाँति पारम्परिक आध्यात्मिक और धार्मिक मूल्यों के आचार्य है, किन्तु वे ज्ञान की सबसे बड़ी बाधा केवल नारी को नहीं मानकर मूल रूप में इसका बाधक तत्त्व 'काम' को मानते हैं वह काम स्त्री पुरुष किसी में भी हो सकता है। आज के समय मे जब नारी सुरक्षा के लिए 'मिशन शक्ति' जैसे

अभियान चलाए जा रहे हैं वे इस सामाजिक विद्रूपता का मूल कारण नारी का सौन्दर्य, सुकुमारता और दैहिक आकर्षण नहीं अपितु मानवमन की नैतिक दुबलता 'काम' को उत्तरदायी ठहराते हैं। वे कहते है कि मानव समाज के सभी बखेड़ों का सबसे मुख्य सूत्रधार यह काम पिशाच ही हैं। उन्हीं के शब्दों में यह उनका विचार द्रष्टव्य है:

भूलत है कुलधर्म सबै तबही जबही यह आनिग्रसै जू।
कैशव वेद पुरानन को न सुनै, समुझै न, ग्रसै ने हँसै जू।
देवन तें नर देवन तें नर ते बर वानर ज्यौं विलसे जू।
यंत्र न मंत्र न भूरि गनै जगजीवन काम पिशाच बसै जू।
ज्ञानिन के तन प्राणनि को कहि फूल के बाननि वेधत को तौ।
बाय लगाय विवेकिन को बहु साधक को कहि बाधक हो तो।
और को केशव लूटतो जन्म अनेकनि के तपसान को पो तो।
तो रामलोक सबै जगजातो जु काम बड़ो बटपार न होतो।।[2]

मुक्ति के साधकों को लिए वे भोग को त्याज्य बताते हैं। नारी को जो भोग्या मात्र समझते हैं उन्हें वे सावधान करते हैं। वे नर–नारी के विहित सम्बन्ध को सम्मान की दृष्टि से देखते है। भोग्या दृष्टि रखने वालों को इस दृष्टिकोण को त्यागने के लिए जागरूक करते हैं। भोग वासना को प्रतिरूप मानने वालो के लिए उनकी देशना है।

जहाँ भामिनी, भोग तहँ, बिन भामिनि कह भोग। भामिनि छूटै जग छुटै, जग छूटे सुख योग।[3]

परस्त्री प्रेम को लोक मार्यादा विरुद्ध घोषित करते हुए उसे सबसे निकृष्ट मानते हैं और कितने मार्मिक शब्दों में होने भाव व्यक्त किये हैं:

धूम से नील निचोलन सोहै। जाय छुई न विलोकत मोहै।
पावक पाप शिखा बड़ बारी। जारति है नर को परनारी।
बंक हियेन प्रभा सरसों सी। कर्दम काम कछू पारसी सी।
कामिनी काम की डोर ग्रसी सी। मीन मनुष्यन की बनसी सी।[4]

व्यावहारिक दृष्टि से केशवदास नारी के पत्नी रूप को महिमान्वित करते हैं। पत्नी के बिना घर में रहने वाले पुरुष को वे अधर्मी मानते हैं। पत्नी को त्याग कर संन्यास लेने वाले पुरुष के भी वे समर्थक नहीं है। पति–पत्नी के बिना निष्फल है, ऐसा वे मानते हैं:

घरनी बिन घर जो रहे, छाड़ै धर्म अधर्म।
बनिता तजि जो जाइ वन, वन के निष्कल कर्म।[5]

पति–पत्नी एक दूसरे के पूरक हैं, केशवदास का यह अनमोल वचन आज के समाज के लिए अत्यन्त विचारणीय और वरदान रूप हैं। पुरुष का नारी के प्रति सम्मान भाव और नारी का पुरुष के प्रति समर्पण भाव आज के बिखरते नर–नारी सम्बन्धों का चिरन्तन जीवन सूत्र बन सकता है:

पत्नी पतिबिनु दीन अति, पति पत्नी बिनु मन्द।
चन्द बिना ज्यों यामिनी, ज्यों यामिनि विनु चन्द।
पत्नी बिनु तन तजै, पितु पुत्रादिक काइ।
केशव ज्यों जलमीन त्यों, पति बिनु पत्नी आइ।[6]

महाकवि केशदास के अनुसार पत्नी के लिए पति देव स्वरूप होना चाहिए। पत्नी के लिए पति किसी भी परिस्थिति में त्याज्य नहीं है। अपने पत्नी धर्म की रक्षा के लिए उसे मन वचन कर्म से धर्म का आचरण करना चाहिए। वे कहते हैं:

जिय जानिये पतिदेव। करि सबै भाँतिन सेव।
पति देई जो अति दुःख। मन मान लीजै सुख्ख।।
सब जगत जानि अमित्र। पति जानि केवल मित्र।।

इस प्रकार महाकवि केशवदास की काव्य में नारी चेतना का उदात्त भारतीय स्वरूप देखने को मिलता है। पवित्र और सनातन भारतीय परम्परा पोषित उनके विचार विखंडित होते जीवन मूल्यों को नवीन जीवनी शक्ति प्रदान कर सकते हैं।

उनकी पैनी दृस्टि के आलोक से नारी पुरुष के समानांतर संबंध के क्षीण तंतु को तोड़ने वाला, 'काम' नामक हेतु बच नहीं पाता, जबकि तत्कालीन बड़े–बड़े कवियों ने परंपरा का आंख मींच कर अनुमोदन किया है।

इसके अतिरिक्त अन्य भक्तिकालीन कवियों के परम्परानुसार सीधे–सीधे नारी को ईश साधना में बड़ी बाधा ठहराया है। वर्तमान युग में कोई भी बुद्धिजीवी नारी यह विचार स्वीकार नहीं कर सकती। सत्य भी यही है कि पुरुष को स्त्री और स्त्री को पुरुष जिस प्रेरक तत्व के कारण बाधक लगता है वह मूलतः 'काम' है। त्यागपूर्वक काम का सेवन सृष्टि प्रयोजन को सिद्ध करना है अन्यथा केवल काम वासना मनुष्य को स्वार्थी, संकीर्ण और जग्जीवन के अस्तित्व के लिए विनाशक बन जाती है। ईशावास्योपनिषद् का पावन मंत्र यही पावन विधान कर सृष्टि के संचालन का मंगलकारी उपदेश करता हैः

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।।[7]

निष्कर्ष

नर–नारी का समवेत पवित्र पुरुषार्थ ही भावधाम को सफल बनाता है। दोनों ही एक दूसरे के प्राकृत पूरक हैं और अभिन्न ही हैं, केवल सर्गेच्छा के लिए पृथक–पृथक हैं। दोनों का सहज साथ–साथ जीवन यात्रा में प्रस्थान ही सफल है। केशवदास जी परस्त्री प्रेम को घृणित मानते हैं। पत्नी को वे इतना सम्मान देतें है कि सन्यासी को भी पत्नी त्याग निकृष्ट मानते हैं। सामाजिक संबंधों को इतना अधिक महत्व देकर सैंकड़ों वर्ष पहले वर्तमान समाज के आदर्श को वे देख लेतें हैं। महाकवि केशव उपर्युक्त अपनी विशिष्ट नारी संचेतना के कारण तत्कालीन कवियों में सर्वाधिक मौलिक चिंतक और अत्यंत दूरदर्शी आचार्य हैं।

सृष्टि के संचालन हेतु नर नारी के पृथक–पृथक परस्पर धर्म पालन को सर्वोपरि स्थान देकर वे सबसे अधिक मूल्यवान आदर्श की ओर ध्यान आकृष्ट करते हैं। हिंदी के भक्तिकालीन कवियों और आचार्यों में उनकी नारी चेतना का उज्ज्वल और विशिष्ट स्थान है।

कामायनी की भाँति केशव भी त्यागयुक्त धार्मिक सहचर की भाँति ही नर–नारी के जीवन को जगत जीवन की सफलता घोषित करते हैंः

काममंगल से मंडित श्रेय, सर्ग इच्छा का है परिणाम
भूलकर तुम रहस्य यह नित्य बनाते हो असफल भावधाम।।

व्यावहारिक यथार्थ, नर नारी के सह–अस्तित्व और मानव सृष्टि के संवर्धन के आदर्श को लेकर वे पुरुष स्त्री के समान अधिकारों को दृढ़ता पूर्वक स्वीकार करते हुए दृष्टिगोचर होते हैं। उनके काल में उनकी यह विचारधारा अपना अद्वितीय मत प्रतिष्ठित करती है।

संदर्भ सूची

1. रामचन्द्रिका वंदना २
2. रामचन्द्रिका उत्तरार्द्ध पृष्ठ०५६ ५७
3. रामचंद्रिका उत्तरार्द्ध पृष्ठ ६१
4. रामचंद्रिका पृष्ठ ५४,५५
5. विज्ञानगीता पृष्ठ ७२
6. विज्ञानगीता, पृष्ठ–८६
7. ईशावास्योपनिषद् –१

****